शैतान की मौत

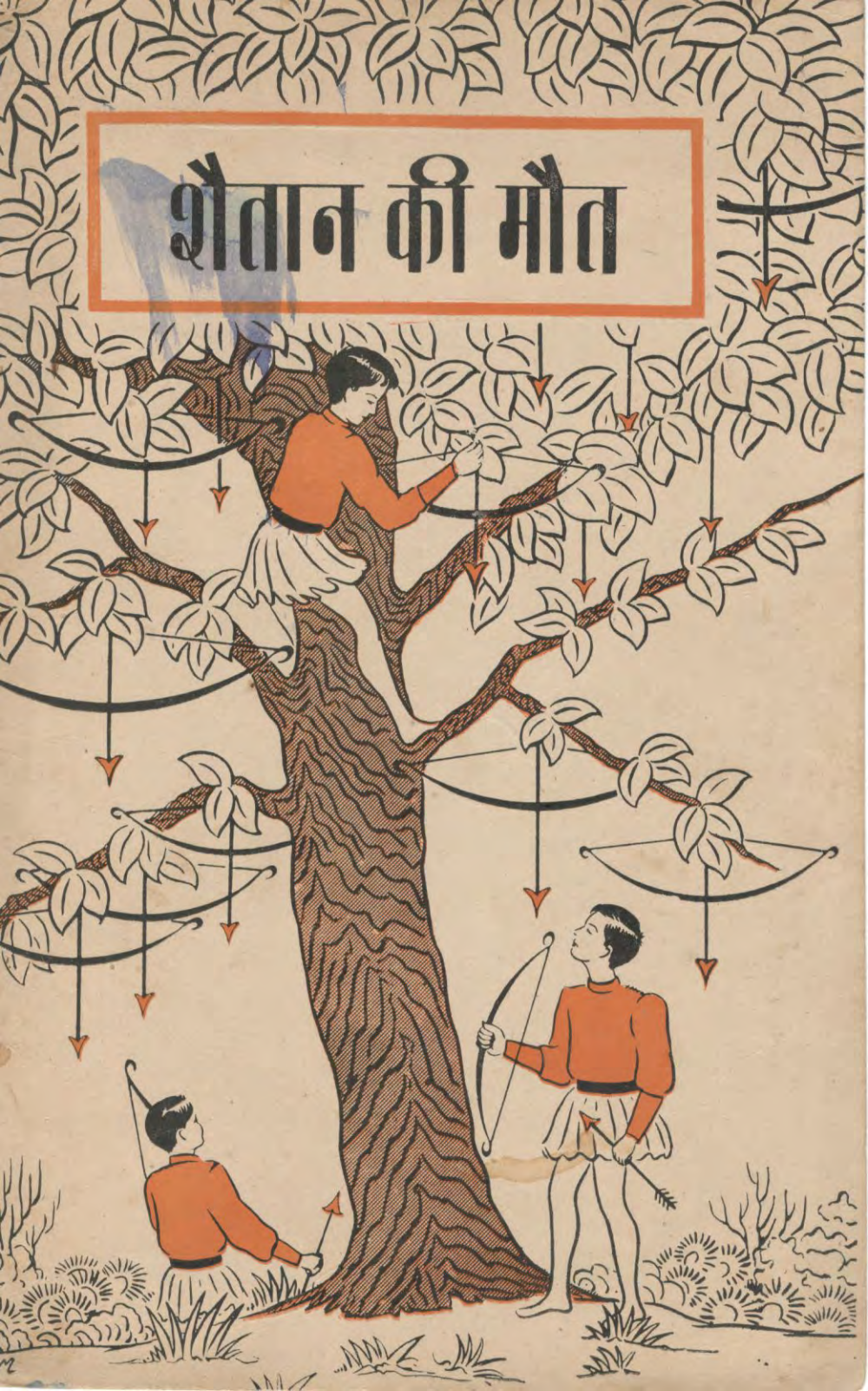

शैतान की मौत

[हिब्रू के एक अमर लोक-काव्य की कथा]

सन्तराम वत्स्य

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली

- टेरीटोरियल कौंसिल हिमाचल प्रदेश द्वारा अगस्त सन् '६० में प्रकाशित सूची के अनुसार प्राइमरी स्कूल पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत।
- शिक्षा संचालक, दिल्ली प्रशासन के आदेश नं० एफ० ७ (४)। ५८ परचेज तिथि ३-२-५९ के अनुसार स्कूल-पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत।
- सेण्ट्रल लायब्रेरी कमेटी, चण्डीगढ़ के सरकुलर नं० पी० आर० डी० लाय ६१/१४२३, दि० ११-१-६१ के अनुसार पंचायत-पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत।

प्रकाशक
नेशनल पब्लिशिंग हाउस
कार्यालय : २६ ए, चन्द्रलोक, जवाहरनगर
विक्री केन्द्र : नई सड़क,
दिल्ली—६

दूसरा संस्करण, जनवरी १९६२

मूल्य
बारह आने

मुद्रक
नूतन प्रेस,
चाँदनी चौक, दिल्ली।

शैतान की मौत

बात कई हज़ार वर्ष की है। जेरुसलेम नगर के पास एक छोटा-सा गाँव था। कभी उसमें घनी आबादी रही होगी, पर आजकल तो वह उजड़ा-उजड़ा-सा दीखता था। उस गाँव का पुराना नाम था 'कालापानी'। आस-पास के गाँवों के बड़े-बूढ़े कहा करते थे कि इस गाँव के लोग बड़े पापी थे। वे दूसरों को सताते, उनका माल लूटते और भगवान् का कभी नाम तक न लेते। उनके इन बुरे कामों से नाराज होकर भगवान् ने वह गाँव शैतान के हवाले कर दिया। किन्तु सभी एक जैसे तो कहीं भी नहीं होते। उस गाँव में भी कुछ भले लोग थे। वे दुखियों की सहायता करते, कभी किसी को सताते नहीं और भगवान् से डरते। धर्म पर उनका पूरा-पूरा भरोसा था। उनकी करनी और कथनी अच्छी थी। जब उन्हें पता लगा कि सारे

गाँव को भगवान् ने शैतान के हवाले कर दिया है तो वे बड़े दुःखी हुए। उन्होंने भगवान् को प्रसन्न करने के लिए प्रार्थना और पूजा की किन्तु उसका भी कुछ असर न हुआ। इधर दिन-प्रतिदिन शैतान की शैतानियाँ बढ़ने लगीं। शैतान नित नये दुःख और कष्ट उन लोगों को पहुँचाने लगा। आखिर उन सबने निश्चय किया कि देवदूतों (फ़रिश्तों) से प्रार्थना की जाय कि वे हमारे गाँव को शैतान से छीनकर भगवान् के राज्य में मिला लें। यह सोचकर उस गाँव के सब भले आदमी उस जगह पहुँचे, जहाँ देवदूत स्वर्ग से उतरा करते थे और भगवान् के न्याय, दया और फैसलों के सम्बन्ध में विचार किया करते थे।

उन सब लोगों ने खाना-पीना छोड़कर सच्चे हृदय से भगवान् की प्रार्थना करनी शुरू कर दी। इसी प्रकार भूखे-प्यासे प्रार्थना करते उन्हें कई दिन बीत गए। उनके शरीर सूखकर हड्डियों के ढाँचे मात्र रह गए। किन्तु उन्होंने न अन्न-जल ग्रहण किया और न प्रार्थना ही बन्द की। अन्त में एक दिन भगवान् के पास से एक देवदूत वहाँ

आया। उस देवदूत ने बड़े मीठे शब्दों में उनसे कहा कि भगवान् तुम्हारी प्रार्थना से बहुत प्रसन्न हैं। उन्होंने तुम्हारे गाँव को जो सराप दिया था, उससे तुम अब छूट जाओगे, पर पूरी तरह नहीं। उन्होंने आज्ञा दी है कि अब वर्ष भर में एक दिन शैतान राक्षस के रूप में तुम्हारे गाँव में आया करेगा और तुम से भेंट वसूल किया करेगा। पूरे एक युग तक ऐसा होता रहेगा। किन्तु अगर तुम लोगों का जीवन पवित्र रहेगा और तुम धर्म-कर्म करते रहोगे तो तुम सब गाँव वालों के पुण्य-प्रताप से एक बालक पैदा होगा और उस बालक के हाथों उस राक्षस की मौत होगी।

इतनी बात कहकर वह देवदूत भगवान् के गुणों का बखान करता हुआ, वापस स्वर्ग को चला गया। वे सब धर्मात्मा लोग भी अपने-अपने घरों को चले गए और उस दिन से लेकर आगे से भी अधिक ईमानदारी, नेकनीयती और धर्म का जीवन बिताने लगे।

इस बात को हुए कई वर्ष बीत गए। उस 'कालापानी' गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। बेचारी

गरीब बुढ़िया दिन भर चरखा कातती रहती। चरखे की 'घूँ-घूँ' की आवाज़ के साथ बुढ़िया कोई गीत गुनगुनाती रहती। बुढ़िया के झक सफेद बालों जैसा बारीक सफेद धागा निकलता रहता और तकली पर लिपटता जाता। जब सूरज छिपने को होता, और बुढ़िया के घर के झरोखों में रहने वाले कबूतर चुग्गा चुगकर अपने घोंसलों में आ बैठते, तो बुढ़िया उठती और दिनभर के कते सूत को बाज़ार लेजाकर बेच देती। उसके जितने पैसे मिलते, उनका आटा-दाल लेकर घर लौट आती।

उस बुढ़िया का एक दोहता था। उसका नाम था कमर। उनकी भाषा में 'कमर' का अर्थ होता है चाँद। सचमुच 'कमर' चाँद जैसा ही खूबसूरत था। कमर की बुढ़िया नानी जब शाम को सूत बेचने बाज़ार चली जाती तो वह शाम के झुसमुसे अन्धेरे में अकेला बैठा नानी के आने की राह देखता रहता।

बुढ़िया बाज़ार से आती, चूल्हा सुलगाती और खाना बनाने में जुट जाती। खाना तैयार होते-होते काफी रात हो जाती। नानी और दोहता दोनों साथ-साथ खाते और सो जाते।

सवेरा होते ही कमर आँखें मलता हुआ उठ खड़ा होता और बस्ती से बाहर की पहाड़ियों पर जा पहुँचता। शहद की मक्खियाँ भी अपने छत्तों को छोड़कर शहद की तलाश में निकल पड़तीं और बगीचों और बनों में फूलों का रस बटोरने के लिए मारी-मारी फिरतीं। चिड़ियाँ और दूसरे पक्षी भी अपने घोंसलों से निकल पड़ते और आकाश में उड़ते-तैरते, मधुर कल-कल करते, एक पेड़ से दूसरे पर और एक टहनी से दूसरी टहनी

पर जा बैठते। उनकी तरह-तरह की आवाज़ों से सारा जंगल गूँज उठता।

धीरे-धीरे गाँव-भर के लड़के-लड़कियाँ वहाँ इकट्ठे हो जाते, और खेल-कूद में लग जाते। कोई गीली मिट्टी की रोटियाँ बनाता तो कोई पत्थरों

पर पत्थर चुनकर मकान बनाने में लग जाता। लड़कियाँ गुड़िया और गुड्डे की शादी रचातीं और खुश होतीं। उन्हीं में से एक राजा बनकर राजदरबार लगाता, और दूसरा कैदी बनकर राजदरबार में पेश होता। इन खेलों में वे सारा दिन भूखे ही

काट देते क्योंकि इस गाँव के किसी भी घर में दिन का खाना नहीं बनता था। जब दिन डूबने को होता तो यह बाल-मण्डली उछलती-कूदती, गाती-नाचती गाँव की ओर भाग पड़ती।

एक दिन सवेरे कमर ने बाहर जाने के लिए दरवाज़ा खोला ही था कि उसे रोकते हुए उसकी नानी ने कहा—"मेरे बेटे! आज तुम कहीं मत जाओ।"

"क्यों नानी।" कमर ने झट-से पूछा।

"बेटा, आज एक त्यौहार है। इस त्यौहार के दिन बच्चे घरों से बाहर नहीं निकलते। जो बच्चे आज दिन भर घर पर रहेंगे उन्हें शाम को बहुत-से खिलौने और बढ़िया मिठाई मिलेगी। मैं भी तुम्हें खिलौने और मिठाई लाकर दूँगी।"

इस गाँव के बच्चों को दो जून पेट भर रोटी भी नहीं मिलती थी। मिठाई की तो बात ही क्या! कमर कई दिनों से खिलौनों और मिठाई के लिये तरस रहा था। इसलिये आज जब उसने नानी के मुँह से खिलौनों और मिठाई की बात सुनी तो खुशी से फूला न समाया और खुशी

के मारे उछलकर बोला—नानी, मैं आज दिन भर घर पर ही रहूँगा, कहीं नहीं जाऊँगा। तुम मेरे लिये खिलौने और मिठाई लेती आना।

बुढ़िया कमर को मना-तनाकर, दरवाजे को बाहर से बन्द करके चली गई। दिन चढ़ता गया और कमर आँगन में खेलता रहा। उसकी परछाईं सिमटती-सिमटती पाँव के पास पहुँच गई, पर बूढ़ी नानी नहीं लौटी। दिन-भर कूदने-फाँदने वाला कमर आज छोटे-से आँगन में कैद था। अकेले उस का मन ज़रा भी नहीं लग रहा था। पर खिलौनों और मिठाई का लालच उसे रोके हुए था। जब बाहर ज़रा-सी भी आहट होती, तो वह सोचता कि शायद नानी आ रही है। वह बार-बार किवाड़ों की ओर देखता, ज़रा-सी आहट पाकर उसके कान खड़े हो जाते, पर नानी नहीं लौटी, नहीं लौटी। कमर ने सोचा अब तो नानी शाम से पहले नहीं लौटेगी। तो फिर क्यों न बाहर निकल कर साथियों से खेला जाय! मैं नानी के आने से पहले ही लौट आऊँगा, और नानी समझेगी कि मैं दिन भर घर में बन्द रहा हूँ। पर दरवाजा

बाहर से बन्द था, उसे कैसे खोला जाए ! वह दीवार फाँद कर बाहर निकल गया। वह अपने हम-जोलियों के घरों की ओर भागा। पर यह क्या ! सारी गलियाँ सुनसान पड़ी हैं। कोई आता-जाता दिखाई नहीं देता। और सभी घरों के दरवाजों में बाहर साँकल लगी हुई हैं। चरखे की घूँ-घूँ, कोल्हू की चर्र-मर्र, आज कुछ भी तो सुनाई नहीं देता। चारों ओर मुर्दनी-सी छाई हुई थी। इस सन्नाटे में कमर का तो लहू ही जम गया। आखिर वह अपने खेल के मैदान की ओर दौड़ चला। अभी वह मैदान के पास पहुँचा ही था कि एक बड़ी डरावनी आवाज उसे सुनाई पड़ी। उसने नजर उठाकर देखा तो सन्न रह गया। सामने ही एक काला पहाड़-सा खड़ा था। वह हिल-डुल रहा था और बरसाती बादल की तरह गरज रहा था। डर के मारे कमर थर-थर काँप रहा था, उसकी टाँगें सुन्न हो गई थीं। बड़ी कठिनाई से वह पास के एक पेड़ के तने से लिपट कर खड़ा हो गया।

काला पहाड़-सी दीखने वाली वस्तु एक राक्षस था। उसका डीलडौल इतना भारी था कि

पहाड़-सा दीखता था। उसकी आँखें दहकते हुए अँगारे की तरह चमक रही थीं। उसके काले भद्दे चेहरे को बाहर निकली हुई लाल-लाल जीभ और भी भद्दा डरावना बना रही थी। उसके लम्बे-लम्बे सफेद दाँत देखने वालों का दिल दहला रहे थे। सिर के बाल रूखे, मटमैले और काँटों जैसे थे। पर इन सबसे बढ़कर भयंकर था उसका सींग, जो दोनों भौंहों के बीच शूल जैसा चमक रहा था। उस राक्षस के सामने ढेरों खाने की चीजें हंडों में रखी थीं। और कालापानी गाँव के सब सयाने आदमी एक ओर डर से थरथर काँपते एक दूसरे से सटकर खड़े थे। उस राक्षस का मुँह इतना बड़ा था कि वह भोजन से भरे हंडे को एक ही बार अपने मुँह में उँडेल लेता और निगल जाता। जब वह डकारता तो बादल के गरजने जैसी आवाज़ होती और उसके पेट से इतनी हवा निकलती कि आँधी चलने लगता।

एक-एक करके उसने सब हंडे खाली कर डाले। फिर वह बड़े जोर से गरजा। उसकी गरज से धरती हिल उठी, भूचाल आ गया। चारों

दिशाएँ गूँज उठीं, जंगल के जानवर मारे डर के चीखने-चिल्लाने लगे। चील, कौए और दूसरी चिड़ियाँ अपने-अपने घोंसले छोड़कर आकाश में मण्डराने लगीं। कई औरतें और बच्चे उस गरज को सुनते ही बेहोश हो गए।

आँखें तरेर कर राक्षस कहने लगा—"बस, यहा कुछ खाना लाए हो ?"

गाँव वालों में से सात नौजवान आगे खड़े थे। वे कुछ आगे बढ़े और सिर झुकाकर कहने लगे—"पिछले साल तो आप इतना खाकर ही खुश हो गए थे !"

"बको मत ! नहीं तो अभी चबा डालूँगा। मेरी भूख पहले से दुगनी हो गई है।"

गाँव वाले गिड़गिड़ाए—"हम लोग साल-भर एक बार खाकर इतना ही बचा पाए हैं।"

यह सुनकर तो वह और भी बिगड़ उठा। गुस्से में दाँत पीसते हुए उसने पास खड़े एक नौजवान को हाथ में उठाया और मुँह में उण्डेल लिया। उसने उस बेचारे को गंडेरी की तरह चबा डाला और हड्डियों को एक ओर थूक दिया।

फिर कहने लगा--"अगले साल पेट-भरकर खाना तैयार रखना। नहीं तो मैं तुम सबको खा डालूँगा। और मेरी पुरानी आज्ञा को याद रखना। तुम लोग तीन ओर जाना, लेकिन खबरदार जो कोई चौथी ओर गया।"

यह कहकर वह लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ एक ओर को चला गया। उसके चलने से अंधड़ चलने लगा। जहाँ-जहाँ कदम रखा, वहाँ की ज़मीन नीचे धँस गई। रास्ते के पेड़-पौधे उखड़ने लगे।

राक्षस के जाते ही गाँव वालों ने रोना-चिल्लाना शुरू कर दिया। औरतें छाती पीट-पीटकर रोने और राक्षस को कोसने लगीं। जिस आदमी को उसने खा डाला था, उसके घरवाले फूट-फूटकर रोने-पीटने लगे। उसकी माँ का विलाप सुनकर तो सभी की आँखों में आँसू भर आए। सारे गाँव वाले रो रहे थे पर वे सातों आदमी खूब खिलखिलाकर हँस रहे थे। वे कह रहे थे--"अब रोते क्यों हो, हमने तो आगे ही कहा था कि हंडे कम हैं, तब तुम में से किसी ने

नहीं सुना। हमारा कहा न मानने का मज़ा तो तुमने चख ही लिया। एक ही दिन तो वह बेचारा यहाँ आता है और तुम उस दिन भी उसे पेट भरकर नहीं खिला पाते। अब अगले साल के लिये ज्यादा हंडे जुटाना, नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं।" रोते-कलपते लोग अपने घरों को लौट गए और अपने-अपने काम-काज में लग गए। कमर भी चुपचाप घर चला गया।

दूसरे दिन जब 'कालापानी' के लड़के-लड़कियाँ खेल के मैदान में जमा हुए तो कमर ने पिछले दिन जो कुछ देखा था, सब कह सुनाया। डर के मारे सब लड़के-लड़कियाँ सहम गईं। उनके भोले-भाले चेहरों पर डर की छाया मँडराने लगी। लड़कियाँ तो और भी अधिक डरी हुई थीं। उस दिन किसी का मन खेलने का नहीं हुआ। किसी ने गीली मिट्टी की रोटियाँ नहीं बनाईं, पत्थरों को चिनकर कोई महल-मकान न बनाया और न गुड़िया की शादी ही रचाई गई। उस दिन से उनके सारे खेल बन्द हो गए। अब वे प्रतिदिन एक ही खेल खेलते—उनमें से एक

राक्षस बनता और बाकी सब गाँववाले बनते। राक्षस उन्हें तरह-तरह से सताता और वे उसे मारने का स्वाँग रचते।

कुछ महीनों बाद जब फसल कटी और अनाज खलिहानों में जमा हो गया तो वे सातों आदमी जो अपने को राक्षस का मित्र बताते थे, खलिहानों में आ धमके और उपज को कूतने लगे। वे हर किसान को हुक्म देते कि तुम राक्षस के लिए इतने हंडे देना और तुम इतने। वे अपने खाने-पीने के लिए किसानों को डरा-धमकाकर अनाज वसूल लेते। वे कोई भी काम-काज न करते। न हल जोतते और न लकड़ी काटते और न ही गाय-भैंस पालते। सब उनसे डरते थे। कोई भी उनकी बात नहीं टाल सकता था, क्योंकि वे राक्षस के मित्र जो थे।

एक दिन की बात है, कमर अपने साथियों को इकट्ठा करके कहने लगा--"साथियो ! यह कालादेव हमारे गाँव के आधे अनाज को एक ही दिन में आकर हज़म कर जाता है। यही कारण है कि हमें भूखे रह जाना पड़ता है। उसने गाँव

भर को इतना भयभीत कर रखा है कि लोग उसके नाम से भी डरते हैं उसके आगे कोई ज़बान नहीं खोल सकता और वह जो कुछ चाहता है करवा लेता है । इसलिए हमें कोई ऐसा उपाय सोचना चाहिए, जिससे वह राक्षस मर जाए और सारा गाँव सुख की साँस ले ।"

यह सुनते ही सब के चेहरों पर उदासी छा गई और वे मन-ही-मन कुछ सोचने लगे । कमर ने सबसे पहले मुँह खोला । सब कान लगाकर उत्सुकता से उसकी बात सुनने लगे । वह कहने लगा—"हमें सबसे पहले उसका घर खोजना चाहिए । और फिर जब वह रात को सो रहा हो, उसकी दोनों आँखों में तीखी सलाइयाँ चुभोकर उन्हें फोड़ डालना चाहिए। इस प्रकार वह अन्धा हो जाएगा । उसे रास्ता नहीं सूझेगा और वह भूखों मर जाएगा ।"

एक लड़के ने कहा—"पर उसके घर का किसी को कुछ अता-पता भी तो नहीं है । खोजें तो कैसे ?" उस पर कमर ने कहा--"मेरी समझ में तो यह आता है कि उस राक्षस ने जो आज्ञा

दे रखी है कि तीन ओर जाना लेकिन चौथी ओर न जाना तो हो न हो, उसका घर उसी चौथी ओर होगा।" बात सोच-समझकर कही गई थी, इसलिए सब को जँच गई और सब मारे खुशी के उछल पड़े, जैसे उन्होंने उसका घर ही ढूँढ़ निकाला हो। यह तय हुआ कि घर वाले राजी-खुशी तो किसी को जाने नहीं देंगे। इसलिए आधी रात के समय चुपचाप सब अपने-अपने घरों से निकल भागें और इसी जगह आकर जमा हो जाएँ। फिर रात-रात में ही यहाँ से चल पड़ें और सबेरा होने तक इतनी दूर निकल जाएँ कि घर वाले छू भी न सकें।

यह तरीका सब को पसन्द आया। और एक बार फिर सब उछल-कूद मचाने लगे। इसी समय उनमें से एक बोल उठा--"आओ, आज फिर अपना पुराना खेल खेलें—लड़कियाँ गीली मिट्टी की रोटियाँ बनाएँ और गुड़िया की शादी रचाएँ, और हम राजा और कैदी का खेल खेलें। फिर न जाने इस मैदान में कब इकट्ठे होंगे।"

बात की बात में सब अपने-अपने खेल में

मस्त हो गए। दिन डूबने को हुआ तो किलकारियाँ मारते, उछलते-कूदते सब गाँव की ओर भाग चले। गाँव से बाहर पहुँचकर एक बार फिर दोहराया गया कि आधी रात को सब अपने-अपने घरों से उठकर खेल के मैदान में पहुँच जाएँ !

ठीक आधी रात के समय, जबकि सारा गाँव सो रहा था और सन्नाटा छाया हुआ था, सब बच्चे चुपचाप, पाँवों की आहट किये बिना, अपने-अपने घरों से निकल पड़े। कभी-कभी कोई गीदड़ या उल्लू रात के उस सन्नाटे को तोड़कर बोल उठता और उसकी डरावनी आवाज़ दूर तक फैल जाती। बिना मुँह खोले और पाँवों की आवाज़ किये सब गाँव से बाहर हो गए।

गाँव से बाहर होते ही आपस में फुस-फुसाहट होने लगी। सब उत्साह से भरे हुए थे।

खेल के मैदान में पहुँचकर जाँच-पड़ताल की गई कि कोई साथी रह तो नहीं गया। पर सभी आ गए थे। कोई भी घर पर नहीं रहा था।

एक लड़के ने कहा—"मेरे विचार में

लड़कियों को साथ नहीं चलना चाहिए। वे घर पर ही रहें तो ठीक रहेगा। पता नहीं रास्ते में क्या-क्या दुःख और मुसीबतें झेलनी पड़ें।" सब लड़कों ने उसकी हाँ में हाँ मिलाई। पर लड़कियों ने इस बात का विरोध किया। वे लड़कों से अपने को किसी तरह भी कम नहीं समझती थीं और इस काम में भी उनसे पीछे नहीं रहना चाहती थीं। एक लड़की बोल उठी—"जो भी दुःख मुसीबत आएगी, हम झेल लेंगी! जहाँ हमारे भाई जाएँगे, हम भी वहीं जाएँगी। उन्हें अकेले नहीं जानें देंगी।"

किन्तु बहुत-कुछ समझाने-बुझाने पर वे मान गईं। जब विदाई का समय आया तो उनकी आँखें भर आईं और गले रुँध गए। मन तो लड़कों का भी भारी हो रहा था, पर जो जिम्मेवारी उन्होंने अपने ऊपर ली थी, वह उन्हें बढ़ावा दे रही थी। आखिर वे चल पड़े और जल्दी ही रात के अँधेरे में आँखों से ओझल हो गए। अब तो बेचारी लड़कियाँ घुट-घुट कर रोने लगीं।

उस घने अँधेरे में लड़के बढ़े जा रहे थे। रास्ता जाना-पहचाना नहीं था, और कभी घर से बाहर भी नहीं निकले थे। उस पर ऐसी अँधेरी रात कि हाथ को हाथ नहीं दिखाई देता था! तरह-तरह की डरावनी आवाजें सुनाई दे रही थीं। कभी तो कहीं पास ही शेर के दहाड़ने की आवाज आती और कहीं रास्ता काटते और पाँवों के नीचे से निकलते साँपों की सरसराहट सुनाई देती। कभी पास की कोई झाड़ी भूत-सी जान पड़ती और ऐसा मालूम होता कि यह भूत हाथ फैलाए उन्हीं की ओर बढ़ रहा है। पर बात के धनी लड़के एक दूसरे का हाथ पकड़े, बिना झिझके-डरे, आगे और आगे ही बढ़ते गए। आखिर पूर्व की ओर प्रकाश फैलता हुआ दीखने लगा। अन्धकार के बाद प्रकाश और दुःख के बाद सुख आता ही है। जो लोग अंधकार के क्षणों और दुःख की घड़ियों का हिम्मत के साथ सामना करते हैं, वे सदा विजयी होते हैं और संसार में अपना नाम अमर कर जाते हैं। और जो डर जाते हैं, हिम्मत हार देते हैं, अपना रास्ता छोड़ देते हैं, वे सदा

असफलता का मुँह देखते हैं। उन्हें कभी मन-चाही चीजें नहीं मिलतीं, उनके सपने सच नहीं होते और वे जीवन में कभी कोई बड़ा काम नहीं कर पाते।

प्रातःकाल के प्रकाश में उन्होंने देखा कि आस-पास चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ है और जहाँ तक नजर जाती है, सुनसान बियाबान रेत का मैदान फैला पड़ा है। उसमें न कोई आदमी है न जानवर, न झोंपड़ी है और न झाड़ी ही। न पीने को पानी और न खाने की कोई चीज़। बहुत दूर उन्हें मैदान में एक काला-काला धब्बा सा दिखाई दिया। ये उसकी ओर बढ़े। जाकर देखा तो वहाँ एक टूटी-फूटी क़ब्र थी और उसके पास ही मौलसिरी का एक वृक्ष था। मौलसिरी के फूलों की महक से आस-पास का मैदान महक रहा था और उसके ऊपर एक सफेद मोर बैठा फूलों को चुग रहा था। जब लड़के पास पहुँचे तो मोर ने पूछा—इस तरफ कहाँ जा रहे हो ?

लड़कों ने उत्तर दिया—हम राक्षस का घर खोज रहे हैं।

मोर ने पूछा—उसका घर खोजकर क्या करोगे ?

लड़के बोले—जब हम उसको सोता पाएँगे, तो उसकी दोनों आँखें फोड़ डालेंगे। वह अन्धा होने के कारण न तो खाना तलाश कर सकेगा और न पानी, और वह भूख-प्यास से बेचैन होकर मर जाएगा।

मोर उनकी ये बातें सुनकर हँस पड़ा और कहने लगा—तुम बेकार ही उसका घर खोजने निकले हो। भला राक्षस का भी कोई घर होता

है ? वह तो आज यहाँ, तो कल वहाँ। वह सदा इसी प्रकार एक गाँव से दूसरे गाँव मारा-मारा घूमता-फिरता है। तुम उसे कहाँ खोजोगे और कैसे खोजोगे ?

मोर की बात सुनकर लड़कों की सब आशाएँ मिट्टी में मिल गईं। उनके चेहरों की ताजगी जाती रही और मुर्दनी-सी छा गई। एकाएक उन्हें ऐसा मालूम हुआ, जैसे कि वह बहुत थक गए हैं और कई दिनों से भूखे-प्यासे भी। उनकी टाँगें भारी हो गईं और आँखों के आगे अँधेरा-सा छा गया।

मोर ने उनके मन की दशा को शीघ्र ही भाँप लिया। वह उनसे बोला—ओह ! तुम तो निराश हो गए। यों जरा-सी बात पर निराश नहीं होना चाहिये। मैं उस राक्षस को मारने का उपाय जानता हूँ।

यह सुनकर लड़के खुशी में उछल पड़े और उनके मुरझाए चेहरे फिर हरे-भरे हो गए। एक साथ सब बोल उठे—वह उपाय क्या है ?

मोर ने कहा—तुम तीर-कमान के वृक्ष के

बीज लाओ और उन्हें अपने गाँव में बो दो। बोते ही उसमें पौधा उग आएगा और फलने-फूलने लगेगा। उसमें-तीर कमान के फल लगेंगे। तुम उन्हें तोड़कर गाँव वालों में बाँट देना, और उनसे कह देना कि जब राक्षस आए तो सब उस पर एक साथ तीर छोड़ें। उस पौधे के फल ये तीर कमान उस राक्षस के खून के प्यासे हैं। कमान से छूटते ही वे तीर साँपों की तरह लपलपाते राक्षस के शरीर में चुभ जाएँगे और उसका सारा लहू पी डालेंगे। इस तरह राक्षस मर जाएगा।

मोर के बताए इस तरीके को सुनकर लड़कों के चेहरे चमक उठे। उन्होंने पूछा--तीर-कमान का पेड़ हैं कहाँ ? और उसके बीज कैसे मिल सकते हैं ?

तीर कमान का पेड़ यहाँ से बहुत दूर सुलेमान पहाड़ पर है। वहाँ पहुँचना कोई आसान काम नहीं है। कदम-कदम पर रुकावटें हैं। भूख-प्यास आगे बढ़ने नहीं देती। आँधियाँ और तूफान रास्ता रोक कर खड़े हो जाते हैं। जहरीले साँप

और बिच्छू काटने को दौड़ते हैं। शेर-चीतों की दहाड़ से दिल दहल जाता है। पर अगर कोई सूरमा इन सारी रुकावटों को पार करके उस पहाड़ पर पहुँच जाए तो उसे बीज मिल जाएँगे और जो बीज ले आएगा, वह अमर हो जाएगा। कभी उसकी मौत नहीं होगी।

लड़के तो घर से सिर पर कफन बाँधकर ही निकले थे। डर उन्हें छू भी नहीं गया था। जिन के सामने कोई महान् कार्य हो, कोई लक्ष्य हो, वे भला कब किसी से डरते हैं। उनका रास्ता कौन रोक सकता है?

लड़के कहने लगे--तुम हमें रास्ता बता दो। हम वहाँ अवश्य जाएँगे। हमने इस काम को करने का निश्चय किया है। इसे करके ही छोड़ेंगे। या तो मरेंगे या उस राक्षस को मारेंगे। यही सोच-कर हम घर से निकले हैं।

मोर ने जब देखा कि लड़के अपने विचार पर दृढ़ हैं तो उसने अपना एक पंख उखाड़कर दे दिया और कहा कि जिधर यह पंख जाए उधर ही तुम भी चलते जाना। यह ध्यान रखना कि

पंख के बताए रास्ते से इधर-उधर भटके तो ठीक न होगा ।

लड़कों ने मोर का बहुत-बहुत धन्यवाद किया । फिर उन्होंने पंख को हवा में छोड़ दिया और वह उड़ चला । लड़के भी उत्साह के साथ उसके पीछे-पीछे चलने लगे । आगे-आगे पंख उड़ा जा रहा था और पीछे-पीछे कतार में, हाथ बाँधे, लड़के । भूख लगती तो जंगली कंद-फल खा लेते और नदी-नालों का पानी पीकर प्यास बुझा लेते। साँझ होती, सूरज डूब जाता तो पंख भी किसी पेड़ पर अटक जाता और लड़के उसी पेड़ के नीचे सो जाते ।

इसी प्रकार चलते-चलते दिनों से महीने, और महीनों से साल बीत गए । पर लड़के थे कि उनका उत्साह जरा भर भी कम नहीं हुआ ।

आखिर चलते-चलते वे एक सुनसान बियाबान जगह में पहुँचे । यहाँ कोई हराभरा पेड़-पौधा नहीं था । केवल पेड़ों के सूखे ठूँठ खड़े थे और मट-मैली-सी चाँदनी सब ओर फैली हुई थी । काली-काली घिनौनी सूरत की चमगादड़ें शोर मचाती

हुई इधर से उधर उड़ रही थीं। उल्लू की भयानक घू-घू की आवाज और भी बुरी मालूम हो रही थी। तभी कमर ने देखा कि सामने उसका घर है, आँगन में बैठी नानी चरखा कात रही है। चरखे की घूँ-घूँ और चीं-चीं की आवाज सुनाई पड़ रही थी और बुढ़िया कोई पुराना गीत गुनगुना रही थी। बुढ़या के झक सफेद सिर के बालों की तरह बारीक-बारीक सफेद सूत निकल रहा था और तकला पर लिपटता जा रहा था। इतने में उसकी नजर जब जमीन पर पड़ी तो देखता क्या है कि एक काला फनिहर साँप फन उठाए नानी की ओर बढ़ रहा है, जैसे अभी उसे डस लेगा। कमर ने घबराकर पुकारा—नानी ! नानी !! ओ नानी !!!

पर नानी तो सूत कातने में इतनी मगन थी कि उसने सुना ही नहीं। इधर साँप आगे बढ़ रहा था और साथ ही कमर की बेचैनी भी बढ़ रही थी। वह डंडा लेकर साँप का सिर फोड़ने के लिए आगे बढ़ने ही वाला था कि कुछ सोचकर एकाएक रुक गया। वह मनमें सोचने लगा—कहीं यह सब उस शैतान की ही करतूत न हो। उसने

नानी से कहानियों में सुन रखा था कि शैतान, राक्षस अपने जादू के जोर से तरह-तरह के धोखे लोगों को देते हैं। नहीं तो इस सुनसान बियाबान में कैसा मेरा घर और कौन नानी।

सच पूछो तो यह भूतों-प्रेतों का जंगल था। यहाँ सभी को तरह-तरह की धोखे की चीजें दिखाई पड़ीं। किसी को दिखाई दिया कि उसके माता-पिता घर के भीतर बैठे हैं और घर की दीवारें गिरने ही वाली हैं। किसी ने देखा कि उसके घर के सब लोग गहरी नींद में सो रहे हैं और चोर घर का सब माल-मता समेटकर भागने को तैयार बैठे हैं। किन्तु यह सब धोखा मात्र था—अपने रास्ते पर बढ़ते लोगों को हटाने के लिए, गुमराह करने के लिये। पर उन लड़कों में से कोई भी इन धोखे की चीजों की ओर नहीं बढ़ा, क्योंकि कमर ने सबको पहले ही सावधान कर दिया था।

अधराते के बाद तो और भी डरावनी चीजें दिखाई देने लगीं। आग से जलते डरावने चेहरे और जानवर हवा में नाचते दिखाई देने लगे। कुछ देर बाद उन्होंने देखा कि एक बहुत बड़ा पंखों

वाला घड़ियाल हाथी की तरह चिंघाड़ता-चिल्लाता मुँह खोले और अपने भयानक जबड़ों को किट-किटाता उन्हीं की ओर उड़ा चला आ रहा है। आते-आते वह इतना समीप आ गया कि सब डर के मारे काँप उठे। पर वह उनके पास से होकर वैसे ही तेज़ी से निकल गया। तब उनकी जान में जान आई।

आखिर यह डरावनी रात भी बीत गई और सूरज निकल आया। अब रात की सब चीजें—सूखे ठूँठ, भयानक जलते चेहरे, भूतों की माया और चमगादड़ सब गायब हो गए। अब नीचे सूखी उजाड़ भूमि और ऊपर नीले आसमान के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं देता था। रेत का समुद्र-सा चारों ओर फैला हुआ था। पर वे ज़रा भी न घबराए और उस मोर-पंख के पीछे-पीछे बढ़ते ही गये। पर ज्यों-ज्यों सूरज ऊपर चढ़ता गया, गर्मी बढ़ने लगी। जमीन तवे की तरह गर्म हो गई और लू की लपटों से चेहरे झुलसने लगे! पाँवों में फफोले पड़ गए और प्यास से सबके गले सूखने लगे। उन्हें इस बीहड़ मार्ग पर चलते-

चलते एक दिन और एक रात बीत चुकी थी और आज दूसरा दिन था—ठीक दोपहर का समय। सूरज की हर एक किरण लोहे की गरम सलाई की तरह देह को जला रही थी। इतने में क्या देखते हैं कि सामने कुछ दूर एक हरा-भरा बाग लहलहा रहा है। फूलों और फलों से लदे वृक्ष खड़े मस्ती में झूम रहे हैं। उनकी टहनियों में झूले डाले, कई सुन्दर लड़कियाँ मस्ती में गाती-गाती झूल रही हैं। पास ही एक ओर तरह-तरह के खाने तैयार रखे हैं और पास ही ठंडे और मीठे पानी की सुराहियाँ भरी रखी हैं। भूखे-प्यासे, थके हारे लड़के इन चीजों को देखकर पागलों की तरह उस तरफ दौड़ पड़े। कमर ने उनको फिर सचेत किया और समझा-बुझाकर उस तरफ जाने से रोका। उसने मोर-पंख को दिखाते हुए कहा, देखो, वह पंख किस ओर जा रहा है। क्या तुम अपने रास्ते से भटक नहीं रहे हो? क्यों जान-बूझकर मौत के मुँह में जाते हो? कमर के समझाने पर बाकी सब तो मान गए पर दो लड़के अपने को नहीं रोक सके और बाग में चले गए। उन्होंने

बगीचे में कदम रखा ही था कि न बगीचा रहा, न लड़कियाँ और न वे दोनों। जो अपने रास्ते से भटक जाते हैं, उनकी यही हालत होती है।

बाकी लड़के अपने रास्ते पर चलते रहे। तीसरे पहर के लगभग वे एक आग की नदी के पास जा पहुँचे। वह नदी अंगारों और लपटों से भरी हुई थी। ज्वालामुखी की तरह लावा निकल कर आसमान को छू रहा था। आसमान पर ऊँचे उड़ने वाले पंछी भी लपटों की तपन से जल-भुन कर नदी में गिर पड़ते थे। उस नदी को देखकर तो सबकी हिम्मत टूट गई। पर मोर-पंख तो यहाँ भी नहीं रुका। वह एक कोयलों के बने हुए बजरे में बैठकर पार हो चला। इस बजरे को लकड़ी का एक माँझी खे रहा था। लड़कों ने जब पंख को पार जाते देखा तो सहम गए और कहने लगे कि हम तो इस बजरे पर नहीं बैठेंगे।

कमर ने सबको समझाया—डरने की क्या बात है। हम तो आगे ही जानते थे कि बड़ी से बड़ी मुसीबतें आएँगी। हम तो जान हथेली पर रखकर ही घर से निकले हैं। फिर डर कैसा ?

या तो अपने काम को पूरा करके लौटेंगे या जान दे देंगे। इसलिए आगे बढ़ो और बजरे पर बैठो। अगर जीते रहे तो तीर-कमान के पेड़ के बीज लेकर लौटेंगे और राक्षस को मारकर सारे गाँव को सुखी करेंगे। और अगर मर भी गए तो लोग याद करेंगे कि इन लड़कों ने कोई वीरता का काम किया था। इतिहास की किताबों में हमारा नाम लिखा जायगा और शहीदों में हमारी गिनती होगी।

लड़कों को कमर की बात जँच गई और वे निडर होकर बजरे पर सवार हो गए। उनके सवार होते ही लकड़ी के माँझी ने नाव को खेना आरम्भ कर दिया। उनकी नाव आग की लपटों में से होकर बढ़ने लगी। बड़े-बड़े मगरमच्छ उनकी नाव को निगलने के लिए दौड़े और कई बार तो तूफान के कारण नाव उलटते-उलटते बची। पर इन साहसी लड़कों का कोई कुछ भी न बिगाड़ सका। अन्त में दिन डूबने तक नाव दूसरे किनारे पर जा पहुँची और सब नीचे उतर पड़े। उन्होंने ज़मीन पर पाँव रखा था कि न तो वह नदी रही और न

नाव और माँझी। उन्होंने अपने को एक हरे-भरे लहलहाते जंगल में पाया। वहाँ फूलों से भरी झाड़ियाँ और फलों से लदे पौधे झूम रहे थे। चिड़ियाँ चहचहाती हुई एक टहनी से दूसरी टहनी पर बैठ रही थीं। ठंडे और निर्मल जल के झरने कलकल-छलछल करते बह रहे थे!

इस सुन्दर दृश्य को देखते ही लड़कों की टोली पिछली सारी तकलीफों को भूल गई और नये उत्साह के साथ उछलती-कूदती, नाचती-गाती, हँसती-खेलती पंख के पीछे-पीछे चल पड़ी। कुछ देर चलने के बाद वे एक हरी-भरी पहाड़ी पर पहुँच गए। यहाँ आसमान को छूता एक बहुत ऊँचा पेड़ खड़ा था। इस पेड़ पर ऊपर से लेकर नीचे तक अनगिनत तीर-कमान लटके हुए थे। और मोतियों की तरह चमकीले बीज ऐसे गिर रहे थे जैसे कि ओले पड़ रहे हों। ज्यों ही बीज धरती पर गिरते त्यों ही बड़े-बड़े सफेद सारस उन्हें चुगते। कमर ने आगे बढ़कर उन सारसों को उड़ा दिया और सब लड़कों ने जी भरकर बीज इकट्ठे कर लिए।

अब वह मोर-पंख उन्हें पहाड़ी की दूसरी ओर ले चला। सारी रात वे पहाड़ी से नीचे की ओर उतरते रहे। जब सवेरा हुआ तो देखते क्या हैं कि सामने ही एक बस्ती है। यह बस्ती, यहाँ के घर-गलियाँ, खेत-मैदान, पेड़-पौधे सब उन्हें जाने-पहचाने से मालूम हुए। अब तो वे और भी लम्बे-लम्बे डग भरने लगे। थोड़ी दूर और उतरने पर उन्हें साफ मालूम हो गया कि यह तो उन्हीं की बस्ती 'कालापानी' है और वे अपने गाँव पहुँच गए हैं।

सूरज अभी निकला भी नहीं था कि सब अपने-अपने घर जा पहुँचे। इनको घर से गए कई साल हो चुके थे। इनके वियोग से दुःखी माँ-बाप रो-रोकर अँधे हो चुके थे। बचपन की साथिन लड़कियों को भी इनके घर वापस आने की कोई आस-उम्मीद नहीं रह गई थी। वे समझती थीं कि वे या तो रास्ते में ही कहीं मर गए होंगे या फिर राक्षस ने उन्हें खा डाला होगा। वे उन्हें यादकर सुबक-सुबककर रोया करती थीं।

आज जब ये अचानक अपने-अपने घर पहुँचे तो इनकी आवाज पहचानकर माँ-बाप की आँखों में नजर लौट आई। बहनें भाइयों को पाकर फूली न समाईं और सबकी आँखों से खुशी के आँसू बह चले। सारा गाँव खुशियों से भर गया।

गाँव पहुँचकर लड़कों ने सबसे पहला काम यह किया कि तीर-कमान के पेड़ का बीज बो दिया। यह देखकर सबको आश्चर्य हुआ कि साँझ तक बीज फूटकर अंकुर निकल आया। फिर क्या था, वह पौधा चाँदने पखवाड़े के

चाँद की तरह बढ़ने लगा और जैसे पूनों की चाँदनी सारी दुनियाँ पर छा जाती है, इसी प्रकार इस पेड़ की टहनियाँ फैलकर सारे गाँव पर छा गईं। पंछियों ने उसकी शाखाओं पर अपने घोंसले बना लिये, लड़कियों ने झूले डाल लिये और राह चलते लोग उसकी घनी छाया में आराम करने लगे। गाँव के ढोर-डँगर चर-चुगकर दोपहर को उसके नीचे बैठकर सुस्ताने और जुगाली करने लगे। कुछ दिनों बाद उसमें फूल फूल उठे और उनकी भीनी-भीनी सुगन्ध से सारी बस्ती महक उठी।

जब लड़कों ने गाँव वालों को बताया कि इस पेड़ में तीर-कमान के फल लगेंगे और उनसे राक्षस को मारा जायगा तो सब के सब उनके इस काम की सराहना करने लगे। पर राक्षस के मित्र वे सातों मोटे आदमी उनकी बात पर विश्वास नहीं करते थे। उनका कहना था कि भला कभी पेड़ पर भी तीर-कमान फलते हैं। वे प्रतिदिन आकर पेड़ को ग़ौर से देखते और लड़कों की हँसी उड़ाते।

कुछ ही दिनों बाद सब ने देखा कि फूल मुर्झाकर फलों का रूप लेने लगे हैं और यह फल ज्यों-ज्यों बड़े होते गए, तीर-कमानों के रूप में बदलते गए ।

वे सातों आदमी जो पहले कहा करते थे कि क्या कभी पेड़ों पर भी तीर-कमान लगते हैं, अब जो उन्होंने अपनी आँखों देखा तो मन ही मन घबरा उठे । पर वे फिर भी लोगों से कहते कि भला कभी इनसे भी किसी राक्षस को मारा जा सकता है ? और वे लड़कों की हँसी उड़ाते ।

ज्यों-ज्यों राक्षस के बस्ती में आने का दिन पास आता गया, तीर-कमान बड़े होते गए । जब वे काफी बड़े हो गए तो कमर ने तथा सब लड़कों ने एक दिन पेड़ पर चढ़कर उन्हें तोड़ लिया और गाँव के हर घर में और घर के हर आदमी में उन्हें बाँट दिया । पर वे सातों आदमी फिर भी हँसते रहे और कहते रहे कि भला इन तीर-कमानों से उस हाथी जैसे राक्षस को कैसे मारा जा सकता है ।

आखिर राक्षस के आने का दिन आ पहुँचा ।

उस दिन गाँव में बड़ी चहल-पहल थी। सब अपने-अपने हाथों में तीर-कमान लिये हुए थे और पहले की तरह उनके चेहरों पर घबराहट का कोई निशान नहीं था। सब लोग गोलदायरा बनाकर मैदान में खड़े, राक्षस की बाट देख रहे थे।

इस बार राक्षस की भेंट के लिए एक भी हण्डा नहीं था। राक्षस के आने का समय हुआ तो आँधी-सी आने लगी, भूचाल से धरती हिल उठी और बादलों जैसी गड़गड़ाहट सुनाई देने लगी। इतने में ऊधम मचाता राक्षस वहाँ आ पहुँचा।

उसने जब देखा कि अबकी बार खाने के लिए एक भी हण्डा नहीं रखा गया है, तो बड़े जोर से गरजा। अभी वह पूरा गरज भी न पाया था कि कमर के इशारा करने पर चारों ओर से हजारों तीर उसके हाथी जैसे शरीर में चुभ गए। वह हैरान, परेशान, मुँह ताकता खड़ा रह गया। पल-भर बाद ही तीरों की चुभन से उसका सिर चक-राने लगा और वह लट्टू की तरह चक्कर खाने लगा। उस समय ऐसा मालूम हो रहा था जैसे बवण्डर नाच रहा हो। फिर वह चुभन के कारण

चीखता-चिल्लाता और तरह-तरह की धमकियाँ देता हुआ धरती पर गिर पड़ा।

उसके मरने से जैसे गाँव वाले जी उठे। उन के चेहरे पर खुशी दौड़ने लगी और इस खुशी में वे कई दिनों तक उस मैदान में मस्ती से नाचते-गाते रहे। अब वह पेड़ उस बस्ती का देवता बन गया। लोग उसके नीचे प्रतिदिन घड़ों पानी उँडेलते और लड़कियाँ हार गूँथकर उस पर चढ़ातीं।

दिन बीतते गए और इन मेहनती लोगों की सन्तानें एक गाँव से दूसरे गाँव और एक शहर से दूसरे शहर में फैलने लगीं। वे जहाँ कहीं भी गए, अपने साथ मुसीबतों और तकलीफों से जूझने की हिम्मत और ताकत लेते गए।

जीवन में ये तीन बातें ही तो हैं, जो आदमी की हिम्मत और ताकत को दिखाती हैं। ये तीन बातें क्या हैं? ये बातें हैं—मुसीबत को न मानने की आदत, अकल से पूरा-पूरा और सोच-समझकर काम लेना और जो इरादा कर लिया, जो एक बार ठान लिया उसे पूराकर छोड़ने की धुन।

•